बंटवारा

यह क्यों हुआ?

वचन पाठः 1 और 2 राजाओं

कुछ सप्ताह पूर्व मुझे एक बहुत पुराने, अति सम्मानित सुसमाचार प्रचारक का पता चला जिसने अपनी पत्नी से बेवफाई करके अपने विवाहित जीवन को तबाह कर लिया था। यह सुन कर मुझे धक्का सा लगा। मैं तुरन्त उन सभी कारणों पर विचार करने लगा कि ऐसा क्यों नहीं होना चाहिए था। मैंने मन में सोचा कि ''वह तो वचन को जानता था। कितने सालों से वह घर-घर और सभाओं में लोगों को धार्मिकता के प्रति समर्पित होने की शिक्षा दे रहा था। वह समझदार था और पाप के स्वभाव को जानता था। उसकी संगति भी परमेश्वर का भय मानने वालों लोगों के साथ रहती थी, जो उसे परमेश्वर का विश्वासयोग्य होने को प्रेरित करते होंगे।''

''नहीं,'' मैंने अपने आप से कहा, ''यह नहीं हो सकता।'' परन्तु खबर बिल्कुल सच्ची थी कि ऐसा हुआ *था*। सच्चा मसीही होने के सभी लाभों के बावजूद इस आदमी ने प्रचार की अपनी सेवकाई का सत्यानाश करते हुए शैतान को अपने जीवन और घर को बर्बाद करने की अनुमति दी थी।

ऐसे ही विचार हमारे मन में तब आते हैं, जब हम इस्राएल जाति के बिखरने के विषय में पढ़ते हैं। शमुएल के समय में (1 शमुएल 8:1-4), परमेश्वर ने लोगों की विनतियों पर इस्राएल को एक राजा दिया था। पहले तीन राजाओं शाऊल, दाऊद और सुलैमान तक 120 साल (यदि दाऊद के शासन के आरम्भिक $7^{1/2}$ साल जोड़ लिए जाएं[1]), इस्राएल के राजतन्त्र में एकता और सांसारिक राज्य था जो अब्राहम को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा का आंशिक रूप से पूरा होना था (उत्पत्ति 12:5-7)। सुलैमान की मरने और रहूबियाम के गद्दी पर बैठने से इस्राएल के एक राज्य की एकता हमेशा के लिए खत्म हो गई। यह दो भागों में बंट गया, जिसमें दस गोत्रों वाला उत्तरी राज्य और यहूदा और बिन्यामीन के गोत्रों वाला दक्षिणी राज्य था।

''इस्राएल नहीं!'' हम कहते हैं। दबाव में किसी और देश में फूट पड़ने की उम्मीद हो सकती है, पर परमेश्वर के राष्ट्र में नहीं! इस्राएल परमेश्वर का चुना हुआ, परमेश्वर की अगुआई में चलने वाला और संसार के इतिहास में किसी भी अन्यजाति से अधिक आशीषित था। इस्राएल ने कई बार परमेश्वर की सामर्थ को देखा था। उसके आश्चर्यकर्म की शक्ति ने उनके शत्रुओं को हराया और उन्हें उनके दिन भर की रोटी उपलब्ध कराई थी। वे परमेश्वर को जानते थे और उन्हें उसकी सहायता मिलती थी। इन घटनाओं को पढ़ने पर हमें लग सकता है, ''निश्चय ही, किसी भी परीक्षा या परेशानी के आने पर इस्राएली तो मजबूत और एक जुट होकर खड़े होते होंगे। उनमें फूट नहीं होगी और न हो सकती है।'' तौ भी इस्राएल बंट गया।

क्यों? यह कैसे हो गया?

पांच स्पष्ट कारक जिनके कारण इस्राएल बंटा।

द्वेष

इस्राएल के गोत्रों में एक बहुत पुराना द्वेष प्रतीत होता है। तीन सौ पुरुषों के साथ अपनी विजय के बाद गिदोन को एप्रैम के लोगों के द्वेषपूर्ण प्रश्न का सामना करना पड़ा था: ''तू ने हमारे साथ ऐसा बर्ताव क्यों किया है कि जब तू मिद्यान से लड़ने को चला, तब हम को नहीं बुलवाया?'' (न्यायियों 8:1)। गिदोन एप्रैम के काम पर गर्व कर कठिन परिस्थिति को शान्त करने में सफल रहा था। परन्तु बाद में कई साल बाद एप्रैम के लोगों ने यिप्तह के सामने ऐसा ही सवाल रखा, जिससे गृह युद्ध छिड़ गया (न्यायियों 12:1-3)। दाऊद के अन्तिम दिनों में यहूदा के पुरुषों ने अब्शालोम से उसके भाग आने के बाद उसका स्वागत किया, परन्तु दूसरे गोत्रों ने क्रोधित होकर दाऊद से पूछा, ''क्या कारण है कि हमारे यहूदी भाई तुझे चोरी से ले आए, और परिवार समेत राजा को और उसके सब जनों को भी यरदन पार ले आए हैं?'' (2 शमूएल 19:41)। शेबा की अगुआई में ग्यारह गोत्र यह नारा लगाते हुए कि ''दाऊद में हमारा कुछ अंश नहीं और न यिशै के पुत्र में हमारा कोई भाग है ...'' (2 शमूएल 20:1) यहूदा से निकल गए। दाऊद ने शेबा से निपट कर फूट को खत्म किया परन्तु यह घटना रहूबियाम के समय में होने वाले स्थायी बंटवारे की एक धुंधली सी किरण थी।

वर्षों तक द्वेष दरार यूं ही रहा और रहूबियाम पूरी तरह से विस्फोटक बंटवारे का कारण बना। जिस प्रकार संकट के समय चरित्र बनता नहीं, पता चलता है वैसे ही बुराई लम्बे समय तक निष्क्रिय लेटी रह सकती है और फिर तनाव के समय एक बड़े तूफ़ान का रूप ले सकती है।

संवाद की कमी

शेष गोत्रों और उत्तरी फिलस्तीन के पहाड़ी इलाके से यहूदा की भौगोलिक दूरी ने इस्राएली समाज के दो प्रमुख भागों में संवाद कठिन कर दिया होगा। अनुग्रह से परमेश्वर ने उन्हें यह इलाका दिया था। परन्तु परमेश्वर के लोगों की विशेषताएं दिखाने वाली संगति और एकता इसे बनाए रखने के लिए आवश्यक थी। जैसा है वैसे ''चलने देना'' और मान लेना आम तौर पर अच्छे पारिवारिक और सामुदायिक जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने से आसान लगता है।

कौमों और परिवारों को इस्राएल से एक महत्वपूर्ण सबक लेना चाहिए। संवाद के लिए समय देना आवश्यक है। बुराई का जीतने के लिए अनुमति देने की *कुछ भी* आवश्यकता नहीं होती। पतन खुद-ब-खुद वैसे ही आ जाता है जैसे बुराई के हाथों हार होती है। इससे पहले कि गलत सूचना को मान लिया जाए और प्रेम सम्बन्ध बिगड़ जाएं, मिल-जुलकर रहने के लिए समय, संवाद और इकट्ठे होना आवश्यक है।

मूर्तिपूजा

सुलैमान के शासनकाल में मूर्तिपूजा की घुसपैठ से आत्मिक बन्धन अर्थात यहोवा की उपासना जिसने सब गोत्रों को इकट्ठे रखा था, कमज़ोर हो गई थी। संवाद की कमी का कारण उपेक्षा था, परन्तु मूर्तिपूजा को मान लेना विश्वास का त्याग करना था। विश्वास के त्याग के फलों में से एक फूट है।

परमेश्वर की आराधना में बेईमानी कौम के लिए हो या परिवार के लिए, घातक ही रही है।

जो लोग परमेश्वर को त्याग देते हैं वे विनाश, दु:खद समस्याओं में घिर जाते हैं। हो सकता है कि परिणाम हर बार फूट न हो पर परमेश्वर को छोड़ने का प्रभाव गम्भीर और विनाशकारी ही रहता है।

विचारहीनता

सुलैमान की भवन निर्माण कार्यक्रमों के लिए अत्यधिक खर्च और मांगों के कारण अत्यधिक कर और बेगार का काम बढ़ गया, जिससे लोगों के मनों में असंतुष्टि की आग सुलगने लगी। कर के लिए कुछ राशि आवश्यक है और उचित भी है; परन्तु जब कर अत्यधिक हो जाए और उसके लिए लोगों को बलिदान करना पड़े तो आज नहीं तो कल विद्रोह होना ही होना है।

रहूबियाम के राज्याभिषेक के बाद, लोगों के सवाल ने उसे बोझ के प्रति उनकी संवेदनशीलता का संकेत दिया जिसे वे सह रहे थे:

> सो उन लोगों ने उसको बुलवा भेजा कि तब यारोबाम और इस्राएल की समस्त सभा रहूबियाम के पास जाकर यों कहने लगी, कि तेरे पिता ने तो हम लोगों पर भारी जूआ डाल रखा था, तो अब तू अपने पिता की कठिन सेवा को, और उस भारी जूए को, जो उस ने हम पर डाल रखा है, कुछ हलका कर; तब हम तेरे अधीन रहेंगे (12:3, 4)।

तीन दिन के विचार विमर्श के बाद, रहूबियाम ने घोषणा की कि वह उससे भी अधिक बोझ डालेगा जो उसके पिता सुलैमान ने डाला था। ऐसा ही हुआ! अब लोगों के सहने से बाहर था।

कमज़ोर नेतृत्व

रहूबियाम ने बुजुर्ग और बुद्धिमान लोगों की सुनने के बजाय जवानों की सुनकर मूर्खता की (12:8)। आमतौर पर लोग यूं ही फूट में शामिल नहीं होते, उन्हें शामिल किया जाता है! बुद्धि रखने वाला सही अगुवा उन्हें इस विस्फोट से रोक सकता था और वर्षों से बन रही दरार को मिटा सकता था। रहूबियाम गलत आदमी था। वह उस गोल खूंटे जैसा था, जिसमें चौरस होना चाहिए था। उसके पास वह था, जिसकी उसे आवश्यकता नहीं थी और वह नहीं था, जिसकी उसे आवश्यकता थी। वह घमण्ड, स्वार्थ और ढीठपन में तो लम्बा था, पर सहजबुद्धि, विचार और दीनता में छोटा था।

द्वेष, संवाद की कमी, मूर्तिपूजा, विचारहीनता और कमज़ोर नेतृत्व सबको मिला लें; उन्हें संकट के समय इन्हें अच्छी तरह मिलाएं तो वह उग्र झगड़ा निकलेगा, जो आमतौर पर लम्बी जुदाई और फूट को जन्म देता है। आइए हम इसे देखकर सबक लें।

सारांश

इस भक्तिहीन जाति के लिए भक्तिपूर्ण नेतृत्व की कमी के कारण विभाजन हुआ। ये दो जातियां कैसी लगती थीं?

इस्राएल के पास लगभग 9,375 वर्ग मील (15,000 वर्ग किलोमीटर) क्षेत्र था, जो यहूदा देश की भूमि से लगभग तीन गुणा था। इसका इलाका यहूदा से बड़ा ही नहीं, प्राकृतिक संसाधनों से भी भरपूर था। इस्राएल के इलाके में शकेम, प्रतिज्ञा किए हुए देश में अब्राहम की पहली वेदी

वाली जगह; शीलो, जहां कई साल तक तम्बू रहा था; बेतेल, रामा, और गिलगाल अर्थात वह जगह जहां शमुएल भविष्यवक्ता प्रचार करता और प्रार्थना करता था, जैसे पवित्र सम्बन्धों की दौलत थी। अपने बड़े क्षेत्रफल और दस गोत्रों वाला होने के कारण उत्तरी राज्य की जनसंख्या यहूदा से लगभग दोगुनी थी। इस कारण उत्तरी राज्य को जातीय नाम इस्राएल ही दिया गया। इस बंटवारे के बाद बाइबल में ''इस्राएल'' आमतौर पर उत्तरी राज्य को कहा गया है।

परन्तु यहूदा को भी इस्राएल के ऊपर कुछ लाभ थे, जिनमें से प्रमुख यरूशलेम था। यरूशलेम उसकी राजधानी होने का अर्थ यह था कि यहूदा सरकार के राष्ट्रीय प्रबन्ध का मुख्यालय था और इस्राएल का परमेश्वर द्वारा ठहराया धार्मिक केन्द्र था। यरूशलेम में इस्राएल के भौतिक भण्डार अर्थात दाऊद और सुलैमान की सम्पत्ति भी आ गए थे। मन्दिर वहां होने का अर्थ यह था कि समय बीतने पर याजकों ने और परमेश्वर के खोजियों ने उत्तर से दक्षिण में पलायन कर जाना था (2 इतिहास 15:9, 10)।

यहूदा के पास लगभग 3,435 वर्ग मील (5,496 वर्ग किलोमीटर) क्षेत्र था, परन्तु इसकी धार्मिक शक्ति ने इसे अधिक स्थिरता दी। यहूदा को यह शक्ति एक मन्दिर और एक पक्की राजधानी यरूशलेम मिलने के कारण मिली, जो दाऊद और सुलैमान का नगर था। इस्राएल में दान और बेतेल आराधना के दो स्थान थे और उसके बाद शकेम, तिर्सा और सामरिया थे। इससे इस्राएल के लिए एकता कठिन हो गई।

इस्राएल 931 ई.पूं से 721 ई.पू. तक केवल 209 वर्ष रहा; परन्तु उस दौरान उन्नीस राजाओं वाले नौ राजवंशों ने शासन किया। हर नये राजवंश का आरम्भ और अन्त हत्या के साथ हुआ। यहूदा 931 ई.पू. से 586 ई.पू. तक लगभग 345 वर्ष रहा, जिसमें दाऊद के वंश से बीस राजा हुए। छह वर्ष तक शासन करने वाली रानी अतलया के ही काल में केवल दाऊद के वंश की रेखा तोड़ी गई।

सामरिया के विनाश और अश्शूरियों द्वारा उत्तरी राज्य को दासता में ले जाए जाने के बाद, दक्षिणी राज्य 136 ई.पू. तक रहा और फिर बाबुल की दासता में चला गया।

उत्तरी राज्य दोबारा कभी न बनने के लिए पूरी तरह से लुप्त हो गया, जबकि सत्तर वर्ष के निर्वासन के बाद दक्षिणी राज्य यरूशलेम में वापस आने वाले बचे हुओं द्वारा फिर से बसाया गया और उन्होंने मन्दिर और नगर को फिर से बना लिया।

दोनों राज्यों के उनकी सृष्टि और उनकी समाप्ति के दृष्टिकोण से उनके उदय होने और पतन का इतिहास यहूदा और इस्राएल के भविष्यवक्ताओं और राजाओं के इर्द-गिर्द घूमता है। इसलिए दोनों राज्यों का किसी भी प्रकार का अध्ययन उनके भविष्यवक्ताओं और राजाओं के बिना अधूरा है।

सीखने के लिए सबक:
परमेश्वर के फाटक के पास ही नरक का द्वार है।

टिप्पणी

[1]देखें 2 शमुएल 5:4.